हेमा

चन्दौली से चलने वाली पक्की सड़क थोड़ा आगे जाते ही बेहद संकरी हो जाती है।सड़क के दोनो तरफ मिट्टी के बने घरों का ये सड़क एक तरह से ऑगन है।घरों के सामने न सिर्फ बॅसहटियॉ बिछी होती हैं.बल्कि इस आंगन मे खाने तक बनते होते हैं।नंग धड़ंग बच्चे भी खेलते दौड़ते रहते हैं।तकरीबन दस मिनट तक बसों के ड्राइवर ब्रेकों पर से अपना पैर ही नही हटाते।गारी गुप्ता करते लोगों की हॅड़िया वर्त्तन तोड़ते फोड़ते ये अपनी बसें इस ऑगन से निकालते हैं।ट्रेक्टरों या दूसरे गाड़ियों मोटरों के अलाव इस ऑगन से रोज पच्चासी बसें गुजरती हैं और उनकी वापसी भी इसी ऑगन से होती है।जाड़े मे तो फिर भी ग़नीमत है.पर गर्मी और वर्षात मे ये बसें टनो के हिंसाव से लोगों के घरों मे कीचड़ और धूल उलेचती हैं।
सड़क के दॉई ओर के घरों के पीछे फगुईयॉ गॉव लगा हुआ है।सड़क जर्बदस्ती इस गॉव के वाहरी हिस्से से निकाल दी गई।अब कमजोर तबके के लोग सरकार से किस बूते पर लड़ते!उन्हे हर्जाने का एक पाई तक नही मिला।कहॉ जाकर वो दूसरा घर बनाते!रहे जा रहे हैं अपने पुश्तैनी घरों मे कीचड़ों से सनते.धूलों मे नहाते और.ड्राइवरों की गालियॉ सुनते हुए।
फगुईयॉ की आबादी कुछ ज्यादे नही है और सबसे बड़ी बात ये है कि गॉव की सारी जमीने सिर्फ दो भाईयों के हॉथों मे है।शेष आबादी छोटी जातियों की है.जिनके मर्द इन दो भाईयों के खेतों पर या समीपवर्त्ती गॉवों के काश्तकारों के यहॉ मजदूरी करते हैं।
फगुईयॉ के दोनो भाई आसपास के इलाकों मे सबसे बड़े काश्तकार माने जाते हैं।फगुईयॉ मे इनकी महल जैसी कोठी है.जिसके कमरों मे ढिबरियॉ नही जलती.बिजली के लट्टू जलते हैं।इस परिवार मे कुऍ से पानी नही खींचा जाता।बकायदे नलके लगे हुए हैं।यहॉ तक कि गाय बैलों के घर तक पक्के हैं।वहॉ भी बिजली के लट्टू जलते हैं।ट्रेक्टरों के पक्के गैरेज वने हुए है।
परिवार मे दूध.घी.दही की तो जैसे नदियॉ ही बहती है।हर कुऍ पर पम्पिंग सेट लगे हुए हैं।इन्हे समय या असमय से होने वाले वर्षातों की रत्ती भर भी परवाह नही रहती।हर बरस ही ये रब्वी और भदई की रिकार्ड फसलें पैदा करते हैं।
खेती बड़े भाई के हॉथों मे है।छोटा भाई मिलिट्री मे हवलदार है।सिर्फ छुट्टियों मे ही उसका गॉव आना जाना हो पाता है।
ईश्वर ही नही.बल्कि भाग्य भी सिर्फ बड़े भाई के पक्ष मे सदा रहा।छोटे भाई को न अपने बड़े भाई जैसा रूप रंग मिला.न उसके जैसा कद ही।उसे पत्नी भी मिली तो भैंस जैसी मोटी.जो तुतलाती भी थी।इन सारी बातों के बावजूद आसपास के इलाकों मे उसका अपने बड़े भाई से ज्यादा मान सम्मान था।उसके गर्मी की छुट्टियॉ न्योता हॅकारियों मे ही गुजरती थी।हर भोज मे वो जाकर मूछी बरी खा आता था।हर अर्थी के पीछे वो अपने तौलिये से अपनी ऑखे मलता चल देता था।उसमे न कोई अहंकार था न अपनी हैसियत का कोई दम्भ।बड़ा भाई सजा धजा सिल्क के कुर्ते मे अपने गले की मोटी सोने की चैन झरकाता चन्दौली बाजार मे अपने बुलेट मोटर सायकल से धूलों का गुब्बार उड़ाता गुजर जाता था.जहॉ उसका छोटा भाई किसी ढाबे मे पुरवे मे चाय लिये हिन्दुस्तान पाकिस्तान युद्ध का ऑखों देखा हाल सुनाता रहता था।उसके पास अपने बड़े भाई जैसी ऐंठी मूछें भी न थीं।धोती की लुंगी और पूरे बॉह की बनियान मे उसे देखकर कोई भी नही कह सकता था कि वो इतना बड़ा काश्तकार है।
फिर भी भाग्य बड़े दम्भी भाई के पीछे ही साये की तरह खड़ा था।उसकी पत्नी पॉच बेटे जनी और हवलदार साहब की पत्नी का गर्भ ही नही ठहरता था।वो अपनी पत्नी का इलाज करवा करवा के थक चले थे।वो ईश्वर के इस अन्याय को भी मन ही मन स्वीकार कर चुके थे।पूरे अंचल मे लोगबाग सिर्फ उनका मुँह देख कर ईश्वर को अन्यायी मानने लगे थे.पर आस किसी ने नही छोड़ा था।
बड़ा उदार मन था हवलदार साहब का।अपने भाई के बेटों पर तो वो अपनी जान ही छिड़कते थे।अपनी छुट्टियों मे वो शहर से तमाम चाभियों और बैटरियों से चलने वाले खिलौने लाते और उनके बीच बॉटते थे।चन्दौली बाजार से तो रोज ही वो एक किलो गुलाब जामुन अपने भाई के बच्चों के लिए बॅधवाते थे।
बड़े भाई अक्सर उन्हे एक बात पर झिड़का करते थे कि उन्हे जरा भी अपनी हैसियत का ख्याल नही है।जब देखो तब चमारों सियारों का संग।
उनका जवाब भी बड़ा सटीक होता थाःभईया!जिस हैसियत की आप बाते करते है.वो बाबूजी की बनाई हुई है।हमने उसके लिए किया ही क्या है!जिस हैसियत मे मेरा रत्ती भर भी योगदान नही है.उसका मै दम्भ क्यों भरूँ!
मैने सुन रखा था कि उनकी भाभी उन्हे बड़ा मानती थीं।भाईयों के छोटे मोटे झगड़ो मे वो हवलदार साहब का ही पक्ष लेती थीं।अपने भवज को भी वो रानी की तरह रखती थीं।हवलदार साहब का खाना उनकी पत्नी परोस के लाती थीं.पर उनकी भाभी उनके बगल मे बैठ कर बेना डोलाती थीं और देवर जी देवर जी कहके उन्हे इतना खिला देती थीं कि खाने के बाद उनसे उठा तक न जाता था।
इस परिवार के सुख दुख मे ऊॅची जात के लोग कम ही शरीक होते थे।ढोल बाजे इनके अपने मज़दूरों की पत्नियॉ ही बजा जाती थीं।ज्यादेतर इनके मेहमान इनके अपने स्तर के लोग होते थे जो बनारस जिले मे ऊॅगलियों पर गिने जा सकते थे।
बनारस को किसी की हैसियत से कभीं कोई शिकायत न रही।वो बस दंभ या अभिमान की भाषा बर्दाश्त नही कर पाता.फिर उसकी नज़रों मे हिकारत भर जाती है।
हवलदार साहब चालीस वर्ष के हो चले थे।ईश्वर ने उनकी भी सुनी।उनके परिवार मे एक बेटी का पदार्पण हुआ।बड़ा ढोल बजा फगुईयॉ मे।उनकी भाभी ने दवाके मजदूरों के बीच अनाज बॉटा।एक हजार एक रूपये से उन्होने कन्या का कलेवा लेके ये रूपये गाने बजाने वाली कॅहारिनों के बीच बॉट दिया।हवलदार साहब से जो भी मिला.उन्हे मुबारकबाद दिया।जन जर्नादन की समवेत प्रार्थना भला ईश्वर कैसे टालते!
हवलदार साहब को अपने पैंतालीस वर्ष की उम्र मे ही पदोन्नति न होने की वजह से रिटायर हो कर गॉव आना पड़ा।उनके बड़े भाई ने राहत की सॉस ली।हवलदार साहब के कन्धे पर खेती का तो जुआ पड़ा.पर चन्दौली बाजार मे उनकी गफलियाबाजी पूर्ववत्त बनी रही।मजदूरों को भी वो अनाप शनाप मजदूरियॉ दे देते थे।वो दिल के ही नही.हॉथ के भी बेहद खुले थे।आये दिन उनका अपने बड़े भाई से झगड़ा होता था।
एक बार की बात हैःइनके खेतों पर एक ओझा नाम का मजदूर काम करता था।धान की फसल कट चुकी थी।सैकड़ों मजदूर खेतो से फसल ढो ढोके खलिहान मे ला रहे थे।बीस बोझों के बाद इक्कीसवीं इनकी मजदूरी होती थी।दोनो भाई खलिहान मे बैठे काम की निगरानी कर रहे थे।अचानक बड़े

भाई ने भाँपा कि ओझा की हर इक्कीसवीं बोझ कुछ ज्यादे ही भारी होती है।गई शाम तक ये काम चलता रहा।खलिहान मे दो गैस की बत्तियाँ भी जला दी गई थी।जब काम खत्म हुआ और मजदूरी की बात आई. तब बड़े भाई ने ओझा को कहा कि वो मजदूरी के बोझों को वहीं रहने दे. जहाँ वो पड़े हैं।वो अपने बारह बोझ दूसरों मे से ले ले।ओझा गिड़गिड़ाने लग पड़ा।
हवलदार साहब इन बातों पर बिल्कुल ही ध्यान नही देते थे।उठ कर अपने बड़े भाई के पास आयेःक्या बात है भईया।क्यों इस मजदूर पर लाल पीले हो रहे हो!
बड़ा भाई तर्रायाःतुम भी सोते रहते हो और ये हमे दिन दहाड़े लूट रहा है।
ःक्या किया है इसने!सुबह से जानवरो की तरह दौड़ रहा है और आप उसे लूटना कह रहे हो!
ःतुम्हारा दिमाग वाकई तुम्हारे घुटनो मे आ गया है।उठ कर देखो इसके बारह बोझों को।हमारे दो बोझों से वो अपना एक बोझ बना रखा है।
ःतो क्या हो गया!न जाने कितने मन अनाज हमारे सड़ जाते हैं।इसके दस पाँच किलो से हम गरीब तो नही होने जा रहे।
बात यहीं से शुरू हुई थी और बढते बढते यहाँ तक जा पहुँची।बड़ा भाई अपना दुनाली लाने घर आया और हवलदार साहब अपने मिलिट्री की ट्रंक से अपना लोडेड माऊसर।देखते ही देखते दालान मे ये दोनो सगे भाई अपने अपने हँथियारों के साथ एक दूसरे के सामने खड़े थे।हवलदार साहब की भाभी को पता लगा।भागती हुई आई और अपने पति की दुनाली परे कर के उन पर बरस पड़ींःइतने वर्षो के बाद मेरे देवर और देवरानी के जीवन मे एक खुशी आई है और आप दो चार मुट्ठी अनाज के लिए मेरे देवर पर दुनाली ताने बैठे हैं!ले जाने दें ओझा को पूरा खलिहान ही उठा के।अनाज फिर भी आ जाएगा. पर आप का सगा भाई नही।
बात आई गई नही हुई थी।इस परिवार पर बँटवारे का काला बादल भी पल भर के लिए मंडराया था. जो हवलदार साहब की भाभी के जीते जी एक तरह से असंभव सा था।इसे और ज्यादे असम्भव हवलदार साहब ने खुद ही बना दिया।वो खुद ही जाकर अपने भईया से मिलेःरहने दीजिये बँटवारे को।आप ही सब कुछ रख लीजिये।मै अपने पेन्शन से अपने परिवार का पेट पाल लूँगा।तीन ही प्राणी तो हैं।इतने जमीन और जायदाद का मै क्या करूँगा भईया!
ये सुनना था कि बड़े भाई की दोनो आँखें बहने को आई।
हवलदार साहब की बेटी का नाम उनकी भाभी ने बड़े प्यार से हेमा रखा. पर हवलदार साहब उसे गुड़िया कहके बुलाते थे।
हेमा धीरे धीरे बड़ी हो रही थी।वो आकर्षक तो थी. पर उसे रंग और कद अपने बाप से मिला था।हवलदार साहब की भाभी जब देखो उसे पावडर से नहलायें रखती थीं. पर उसकी कद का वो क्या करतीं!
जब हेमा सात वर्ष की हुई तो उसे बड़ा भयानक चेचक निकला जो ऐसा भड़का कि उसकी जान तक खतरे मे आ गई।उसे पैसे और दवा के जोर पर बचा तो लिया गया. पर उसका सारा बदन छोटे छोटे दागों से भर गया।
उसकी प्रारम्भिक शिक्षा चन्दौली मे ही हुई।हवलदार साहब ही उसे स्कूल ले आते और वापस ले जाते थे।उनके भाई के सारे बच्चे बनारस के क्विन्स कॉलेज के हॉस्टलों मे रह कर अपनी पढाईयाँ कर रहे थे।
जब हेमा ने इन्टर पास किया तो उसके शादी व्याह की बात भी चलने लगी।बात चलने से पहले ही टूट जाती थी।समर्थ घरों के समर्थ लड़के हेमा के भाग्य मे शायद न बदे थे. फिर उसे चमारों और मज़दूरों से भी तो नहीं बाँधा जा सकता था।पहली वार इस परिवार को इस बात का भान हुआ कि धन के बल पर जीवन की कई असहायतायें खतम नहीं की जा सकतीं।उसके शादी व्याह के पीछे पूरा परिवार एक साथ जुटा था।समय काटने के ख्याल से उसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय मे दाखिला दिलवा दिया गया।वो हॉस्टल मे रहने लगी।
हेमा से मेरा परिचय उसके एक भाई मिथलेष के जरिये हुआ. जो मेरे साथ उदय प्रताप कॉलेज मे बी एस सी कर रहा था।बनारस आते ही हेमा ने सलवार कमीज और दुपट्टे को अल्विदा कहा और जिन्स वगैरह के पैन्ट पहनने लगी।घर से उसे अनाप शनाप पैसे मिलते ही थे।उसके दूसरे शौक भी चर्राये. जैसे सिनेमा काफी हाऊस. इधर उधर के सैर सपाटे इत्यादि इत्यादियाँ।धीरे धीरे उसके कई ब्वाय फ्रेन्ड भी बने।
इन मामलों मे बनारस का विचार बड़ा संर्कीर्ण है।उसे हेमा की स्वतंत्रता बड़ी खली।अब अंजाम आँखों के सामने था।एक वर्ष भी न गुजरा था कि हेमा कैम्पस की शूटिंग स्टार हो गई।उसके भाई का तो सिर उठा के चलना दूभर हो चला था।हर दिन शाम को वुमेन्स हॉस्टल के सामने आठ से दस स्कूटर जा लगते थे।हेमा आज इसके संग तो कल उसके संग।पता नहीं उसका पैर कभीं फिसला या नहीं. पर कैम्पस मे दसों तरह की हवायें उठ चलीं।कैम्पस के गँवई लड़के जिन्हे वो कोई लिफ्ट न देती थी. उसे छिनाल ही कहने लगे।
दूसरे प्रदेशों से आए लड़कों के संग रहने से उसके बातचीत का लहजा ही बदल गया था।अपने बड़े भाई से भी वो इसी लहजे मे बातें करती थीःछोड़ो यार. हटाओ यार।जब तब हवलदार साहब भी उसे बनारस देखने आते थे।जब हेमा पापा कहके उनके गले से लिपटती थी तो उनके जबान पर भी दो चार अन्ग्रेजी के शब्द आ ही जाते थे. जो उन्होने अपने वर्षो की नौकरी मे सीख रखी थी।
कैम्पस मे हेमा की बदनामी उसकी उश्रृंखलताओं की वजह से बढती ही जा रही थी।वो अपने शादी व्याह के रास्ते पर रोड़े नही. पहाड़े इकट्ठा करती जा रही थी।स्कूल कॉलेजो मे आने के बाद लड़के लड़कियों पर ऐसे भी तमाम समीपवर्त्ती इलाकों मे बसे परिवारो की गिद्ध वाली नज़रें उन पर जम जाती हैं।हमारी एक एक गलती का लेखा जोखा रखा जाने लगता है।बनारस मे होने वाली शादियों मे लड़की की सुन्दरता और लड़के की सफलता के अलावे न जाने कितनी दूसरी योग्यताएँ और सार्मथ्य कारक हैं!अगर मै उन्हे गिनवाना भी चाहूँ तो गिनवा नही सकता।लड़कियों से तो कुछ ज्यादे ही अपेक्षा रखी जाती है।
मुझे लगता था कि हेमा को इन बातों की कोई परवाह ही नही है।उसके परिवार पर दबाव बढता ही जा रहा था।हवलदार साहब का अगर वश चलता तो वो अपने हाँथों से एक राम का पुतला बना कर उसे रंगीला नाम के घोड़े पर बिठाके अपनी गुड़िया के लिए फगुईयाँ मे बारात बुलवाते और उसका ऐसा व्याह रचाते कि तुलसी दास को अपने राम सीता विवाह का दम्भ ही न रह जाता।
हेमा का विवाह एक तरह से असंभव होता चला जा रहा था जिसमें उसका अपना योगदान भी नकारा नही जा सकता।दो योग्यतायें उसमे अभीं भी

थीःजवानी और घर का पैसा।पैसा वो बनारस मे पानी की तरह बहाए जा रही थी।बनारस को मै भी अपने बचपन से जानता था।वहाँ की अफवाहों मे एक प्रतिशत की भी सच्चाई नही होती।उश्रृंखलता या थोड़ी बहुत स्वतंत्रता को मै चरित्रहीनता का नाम नही दे सकता था।

मै भी उसे कभीं कभार लंका के किसी ढाबे पर टकरा ही जाता था और उसे देख कर भी अनदेखा कर जाता था.लेकिन जब भी उसकी नजर मुझ पर पड़ जाती थी तब वो अपना कोला और अपने मुकेश.राकेश या नितेश को छोड़ कर मुझे भईया कहके नमस्ते बोल जाती थी।फिर मै उसका भी हालचाल पूछता था।मुझे पता था कि उसके अन्दर एक विद्रोह है जिसके बारे मे उसे भी पता है।उसे ये भी पता है कि जल्द ही उससे उसकी सारी स्वतंत्रतायें छिन जाने वाली हैं।बनारस मे कब तक उसके परिवार वाले डोमेस्टिक साईन्स के नाम पर उसे रहने देंगे! एक भयावह भविष्य उसकी ऑखों के सामने अपनी विकरालता लिए खड़ा था।

मै बनारस छोड़ चुका था और दो बरस के अन्दर मुझे अपना देश भी मुझे छोड़ना पड़ा।इस बीच मै तीन बार बनारस गया और एक बार फगुईयॉ भी .जहॉ की खेती हवलदार साहब अपने भतीजे मिथलेष के साथ सम्हाल रहे थे.जो बनारस मे एक तरह से मेरा अच्छा दोस्त बन चला था।अचानक मुझे अपने चाचा से मिथलेष के पिता की हत्या का पता चला।मै तत्काल बस लेकर उससे मिलने जा पहुँचा।वो अपने दालान मे बैठा अखबार पढ रहा था।मुझे देखते ही वो उठ खड़ा हुआ।गले मिलने के बाद उसने एक नौकरानी को अपनी मॉ के पास मेरे आने का खबर भिजवाया और फिर उसने जैसे चुप्पी ही साध ली।

मै उठा और उसके कन्धे पर अपना हॉथ धर कर बड़े ही अपनत्व से उससे पूछाःकैसे हो बन्धु!

वो अपनी ऑखों पर एक सफेद तौलिया रखे मिनटों तक रोता रहा।

मै चुपचाप आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

कुछ ही देर मे हेमा एक बड़ा सा ट्रे अपनी हॉथों मे सम्हाले हमारी तरफ बढी आ रही थी।टेबल पर ट्रे रख कर अपने भाई को रोते देख कर वो भी रोने लग पड़ी।इनके रोने की खबर पता नही कैसे मिथलेष की मॉ तक ही नही.बल्कि उसके चाचा तक जा पहुँची।ये दोनो भागते हमारे पास आये।कौन किसे तसल्ली देता!

बाबू साहब को गुजरे छ महीने भी न हुए थे।करीब घन्टे भर दालान ऑसुओं और सिसकियों मे डूबा रहा।बड़ी मुश्किल से मिथलेष सहज हो पाया।उसकी मॉ और उसके चाचा जा चुके थे और हेमा मुझसे कुछ खाने की जिद़ कर रही थी।ट्रे की तरफ मुझसे नज़र उठा कर देखा तक न जा रहा था।

आखिरकार मिथलेष ने अपनी चुप्पी तोड़ीःबाबूजी न रहे प्रमोद।

ःमुझे पता है।आज सुबह ही चाचा जी ने मुझे बताया.तभी तो तुम्हारे पास आया हूँ।

मिथलेष के होंठ अभी तक कॉपे जा रहे थाःपता नही कौन मदनगीरा मे उनके बॉयी पसलियों मे अपने सिक्सर की सारी छ गोलियॉ दाग गया।जीप खड़ी थी।हमारा ड्राइवर तक उसे न देख पाया।कब बनारस मे इस प्रभुता की लड़ाई खत्म होगी!

मै भी क्या कहता!चुपचाप उसे सुने जा रहा था।

ःबाबूजी अभिमानी तो थे.लेकिन मै उनके किसी आपसी बैर को नही जानता हूँ।मॉ का सुहाग उजड़ गया।मैने अपनी पढाई उन्ही की वजह से छोड़ी।ऐसे भी लॉ पढ कर मै वकील तो बनने से रहता।दूसरे भाई डाक्टरी इन्जीनयरिंग कर रहे हैं.मै खुश हूँ।

जब तब मै हेमा की तरफ भी देख लेता था.जो अपनी नजरें झुकाये अपने भईया को सुने जा रही थी।जब मैने उसका हालचाल पूछा तो मुझे एक बड़ा ही संक्षिप्त जवाब मिलाःठीक हूँ भईय्या।

बात बढाने के बिचार से ही मैने उससे पूछाःतुम्हारी जिन्स बिन्स कहॉ गई!

ःभईया! ये चन्दौली है.बनारस नही है।

ःजिस बनारस की तुम बात कर रही हो वो दिल्ली या बाम्बे भी नही है।फिर दिल्ली या बाम्बे भी चन्दौली से किस मामले मे बेहतर है!

बस स्टैन्ड पर मै मिथलेष की एक बात पर चौंका।सकलडीहा डिग्री कॉलेज का एक लेक्चरार हेमा को प्रेम पत्र भेजता है।वो कब कहॉ और कैसे हेमा से मिला.ये उसे पता न था.पर उसका एक पत्र मिथलेश की हॉथों मे पड़ चुका था।

ःये तो मेरी समझ से एक अच्छी खबर है.ये कह कर मैने उसका मन टटोलना चाहा।

ःमेरा भी यही ख्याल है।मै खुद भी उससे दो बार मिल चुका हूँ।किसी के मन मे तो झॉका नही जा सकता.लेकिन जिस दिन वो बारात लेकर फगुईयॉ आने की हिम्मत करेगा.मै बारात को लौटने नही दूँगा।हेमा और उसे मै अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा दूँगा।

ःइसकी जरूरत कहॉ पर है मिथलेष!मै अचम्भित उससे पूछा

ःचन्दौली के इतिहास मे कभीं तुमने सुना है कि बेतिया के एक लाला परिवार का लड़का बारात के साथ यहॉ के किसी ठाकुर परिवार की लड़की को व्याह गया हो!

ःनहीं!मै सकपकायाःलड़का कायस्थ है!

ःतो क्या हुआ!सज्जन है।कॉलेज मे पढाता है।घर परिवार से थोड़ा कमजोर है।बस एक बार वो आकर हमसे हेमा का हॉथ मॉग ले.जिसका मै इन्तजार कर रहा हूँ।बाकी सब कुछ मै अकेले देख लूँगा।

मै मिथलेष से गले मिल कर चुपचाप बस मे जा चढा।रास्ते भर पता नही क्या क्या सोचता रहा!

मुझे बस इतना ही याद है कि मै मन ही मन मिथलेष को रास्ते भर यही कहता रहा कि मात्र अपना निजी चरित्र ही हमारे हॉथ मे है जिसे हम अपनी हर अवस्था और स्थिति मे सॅवार या पुचकार सकते हैं।न्याय अन्याय सत्य असत्य या ऐसे कई मापदन्ड प्रत्यक्ष हमारे समाजों ने और अप्रत्यक्ष हमारे ईश्वरों ने तय कर रखा है जिनसे मै कभीं न उलझा और मै नही चाहता था कि मिथलेष इनसे उलझे।उसका बलिदान शायद ये परिवार न झेल पाएगा।

कुछ ही महीने गुजरे थे कि हेमा अपने भाई के हित का ख्याल करके अपने प्रेमी के साथ फगुईयॉ से लापता हो गई।ये खबर मुझे मिथलेष के एक पत्र

से मास्को मे मिली।
मिथलेष और हवलदार साहब हेमा की खोज मे न जाने कहॉ कहॉ भटके!अपने सारे रिश्तेदार और दोस्तों का घर छान मारे।यहॉ तक बेतिया तक गए।न तो हेमा का पता चला और न उसके प्रेमी का।उसकी मॉ रो रो कर बेहाल हो चुकी थीं।हवलदार साहब को तो ऐसा सदमा लगा कि उनकी आवाज ही जैसे गुम हो गई थी।ऊपर से जगहॅसाई।चारो ओर इस परिवार के नाम पर थू थू हो रही थी।
मिथलेष को बस एक बात की तसल्ली थी कि हेमा जहॉ कहीं भी होगी.बस अकेली नही है।लड़का एम ए फर्स्ट क्लास है।कोई न कोई नौकरी उसे किसी भी प्रदेश मे मिल ही जाएगी।
सात वर्षो के बाद मै मास्को से वापस लौटा।बनारस जाने का बस एक बार संयोग बना।मिथलेष की शादी हो चुकी थी और वो एक बेटे का बाप भी बन चुका था।मै उसके साथ चन्दौली भी गया और उसके बच्चे के लिए उसके लाख मना करने के बावजूद एक किलो सेब और अंगूर खरीदा।
चन्दौली बाजार मे काफी परिवर्त्तन आ चुका था।बाजार से गुजरी जी टी रोड और संकरी हो चली थी।कपड़ों की अनगिनत दुकानें पहले भी थीं.उन दिनों भी थीं।बस थोड़ा दुकानों का स्तर बेहतर हो चला था।मिठाईयों की दुकानों मे शीशे के शोकेस तक आ गए थे.पर बिना धूल झाड़े उनके अन्दर की मिठाईयॉ दिखती न थीं।पानों की गुमटियों तक मे बिजली के लट्टू झूल रहे थे।और भी दूसरी दुकानें खुल गई थीं जैसे स्कूटर मोटर सायकल के मरम्मत की दुकान.पम्पिंग सेट से लेकर ट्रेक्टरों के स्पेयर पार्टस की दुकान।बनारस से चलने वाली बसें बेहद कम हो चलीं थीं।चन्दौली मे जीपों और टेम्पो के स्टेन्ड तक बन चले थे।चन्दौली के बाद जमनिया और दिलदारनगर तक बसे गॉवो के लोगों को घन्टों बस का इन्तजार करना पड़ता था।बसों की हालत भी बेहद खास्ता हो चली थी।पता नहीं कहॉ कहॉ के मुसलमान चन्दौली मे आ बसे थे।हर जगह फलों के ठेले और कसाईयो की दुकानें थीं।लोग बाग मांसाहारी हो चले थे।
मिथलेष मेरे मास्को के दौरान घर के अन्दर एक मंदिर भी बनवा चुका था जिसमे एक चौकी पर पता नहीं कितने देवी देवता पत्थर और मूर्तियों की शक्ल मे झाला बाला पहने खड़े या लुढके पड़े थे।चौकी के सामने एक बड़ा सा पीढा रखा हुआ था।मन्दिर की सफाई उसकी पत्नी धनवन्तरी ही करती थी।ये मन्दिर उस रसोई के बगल मे ही थी.जहॉ मीट वगैरह बनते थे।इस हिस्से मे मिथलेष की मॉ और चाची तो झॉकने तक न आती थीं।जब मै नहा धोकर बाहर निकला तब मैने एक अजीब सी बात देखी।मिथलेष मन्दिर के पीढे पर आसन लगाकर घंटियॉ बजा बजा कर अपने श्लोकों से पता नहीं किस देवता या देवी को गा गाके जगाने मे लगा था।बिना किसी दरवाजे और खिड़की का ये मन्दिर अगरबत्ती के धुओं से भरा पड़ा था।बगल के बरामदे मे उसकी पत्नी धनवन्तरी खाना बनाने मे मगन थी।जब तब वो मन्दिर की तरफ देख कर मुस्करा भर देती थी।मुझसे उसने कोई भी पर्दा न कर रखा था।इनका बेटा भी बिना किसी हिचक के मेरे गोद मे आके बैठ जाता था।
मकान के इसी हिस्से मे मुझे सोने के लिए एक साफ सूथरा कमरा मिला था।खाने के बाद हम सभी इसी कमरे मे आ गए।मिथलेष का बेटा बिना किसी से पूछे मेरे बिस्तर मे जा घूसा।गई रात तक हम बैठे गप्पें मारते रहे।दसों बार धनवन्तरी चाय बनाने के लिए उठी।
मिथलेष के कन्धे पर ही पूरी घर गृहस्थी का बोझ था।उसकी पत्नी थी तो गहमर की.पर एम ए पास थी।सुन्दर तो वो थी ही.हॅसमुख भी बेहद थी।मिथलेष के दूसरे भाई भी अपनी पढाई खत्म करके किसी बड़े शहर मे न जा कर बलिया.गोरखपुर.फैजाबाद जैसे शहरों मे सपरिवार रह रहे थे।हवलदार साहब को भी एक नया शौक चर्राया था।आस पड़ोस मे जहॉ कहीं भी किर्त्तन होता था.वो वहॉ जाकर सिर्फ बैठ ही नही आते थे.बल्कि पौ फटने तक किर्त्तन गा गा कर अपना गला भी बिठा लेते थे।उन्हे खैनी का भी नशा लग चुका था।खेती बारी से उनका मन उचट चला था।इस परिवार की हैसियत मे कोई अन्तर न आया था और एक हद तक ये परिवार समाजिक भी हो चला था।हेमा का भी जिक्र आया।नौ बरस हो चले थे।उसका कोई पता ही न मिल पाया।न कोई चिट्ठी न पतरी।
हवलदार साहब को मेरे आने का पता चला।हल्के से खॉस कर मिथलेष के कमरे मे आये।धनवन्तरी झट से अपना घूॅघट सरका कर बिस्तर के बगल मे जा खड़ी हुई।मै और मिथलेष भी उठंग के बैठ गये।अपनी धोती से हॉथ पोंछ कर उन्होने मुझसे सेक हैन्ड कियाःजर्मनी मे डिसिपलिन से रहते हो न!
ःहॉ।
ःभेरी गूड।औडर और डिसिपलिन जितना सिपाहियों के लिए जरूरी है उतना ही सिविलियनों के लिए भी।
ये कहके वो हमारा कमरा छोड़ के चले गये।छत पर बने ऑगन पर वो एक भेंड़ के कम्बल पर लेटे एक ऊॅची आवाज मे गाये जा रहे थेःराम भजो ऐ माटी के पूतलों!वो सूख के नरकंकाल हो चले थे।उनकी हेमा जिन्दा तो थी.पर वो किस हालात मे आज के दिनो मे होगी!ये बस ईश्वर ही जानता था।
मास्को से वापस आने के बाद मै कुछ ज्यादे लम्बा अपने देश मे नही रहा।जर्मनी चला आया.जहॉ शायद मुझे अपने जीवन के शेष वर्ष बिताने थे।मेरे और मिथलेष के बीच औपचारिक पत्रों का आदान प्रदान कभीं न रहा।हम एक दूसरे को आज तक अनियमित तौर पर लिखते हैं फिर हमारे पत्र सिर्फ एक पन्ने के नही होते।मै उससे अपना कुछ भी नही छुपाता और न छुपाया।बस एक बात मैने उससे आज तक छुपा रखी है।
मास्को जाने से पहले एक बार मुझे मुजफ्फरपुर जाना पड़ा था।हमारी पैसेन्जर ट्रेन दो चार धचके खा कर अचानक रूक गई.बिना किसी स्टेशन के ही।जेठ का महीना चल रहा था।ट्रेन का एक पंखा तक काम नही कर रहा था।सवारियों और गल्लों के बोरियों से डिब्बे ही नही.उनके पाखाने तक भरे हुए थे।ईजन का ड्राइवर ट्रेन के बगल की पटरियों पर दौड़ता सबसे कहे जा रहा था कि ईजन मे कोई खराबी आ गई है।देखते ही देखते सारे के सारे डिब्बे भरभरा कर खाली हो गए।मै भी डिब्बे से उतर कर बाहर आ गया।दोपहर के यही कोई एक बज रहे थे।सूर्य देवता अपनी पूरी ताप मे थे।आसपास कोई पेंड़ पौधा तक न था जिसकी छॉव मे बैठा जा सके।हवा तक नही बह रही थी।दूर दूर तक बस सूखे खेत ही फैले हुए थे।लोगों से मुझे पता चला कि पास के जंक्शन पर खबर जा चुकी है।नया ईजन कब तक आएगा ये सिर्फ ईश्वर को ही पता था।मै चुपचाप जा कर एक मेंढ पर बैठ गया।कमीज खोल कर अपने कन्धे पर सूखने को डाल दी।अचानक मुझे सामने से सैकड़ों लोग दौड़ते आते दिखे।किसी के हॉथ मे घड़ा.तो किसी के हॉथ मे वाल्टी।कईयों के कन्धे पर तो कॉवर तक थे।देखते ही देखते ट्रेन के बगल मे पानी की दुकाने ही दुकाने लग गई।पहले तो लोग समझे कि पास के गॉव वाले हमारी मदद करने आए हैं।जब उन्हे पता चला कि अल्यूमिनियम की दबी पिचकी पानी की ग्लास एक रूपये की है.तब उन्होने

गरियाना शुरू कर दिया।कई परिवारों के पास पानी से भरी सुराहियॉ भी थी.जिसे वो किसी नवजात बच्चे की तरफ दबोचे बैठे थे।पानी की दुकानों पर फिर भी भींड़ ही भीड़ थी.जो छॅटने का नाम ही न ले रही थी।गॉव वाले भी पूरी तैयारी के साथ आए थे।एक ग्लास पानी एक रूपईया.पानी के साथ गुड़ का एक छोटा धेला डेढ रूपईया.निव्बू पानी सीधे पॉच रूपईया।मुझे लग रहा था कि इस गॉव के पास पहली बार किसी पैसेन्जर ट्रेन का ईंजन खराब नही हुआ था।इस गॉव के देवता आए दिन किसी न किसी ट्रेन की ईंजन खराब करवाते होंगे.अन्यथा इतने कम समय मे गॉव वालों की ये सारी तैयारियॉ सम्भव न थीं।मै भी एक ग्लास निव्बू का पानी खरीदा.जिसमे कच्चे कागजी निव्बू को निचोड़ निचोड़ कर मुश्किल से शायद दो बूॅद रस टपकाया गया था।

गर्मी थोड़ी कम हो चली थी।हल्की हल्की हवा भी बहने लगी थी।आसपास के खेत लोगों से भरे पड़े थे।गॉव वाले अपने पानी की आखिरी बूॅद बेच बाच के जा चुके थे।

शाम झुरमुट हो चली थी।अचानक एक डिब्बे से एक औरत उतर कर खेतों की ओर भागी।उसके हॉथों मे उसकी चप्पले थीं।उसके पीछे एक दुवला पतला आदमी अपने पैंट की बटन बन्द करता उतरा और उसके पीछे भागा।उसने एक सेन्डो बनियान पहन रखी थी।देखते ही देखते वो उस औरत को दबोच कर पीटने लगा।लोग झट से घेरा बना कर उस औरत का पीटना देखने लगे।मुझे रह रह कर उसका आर्त्तनाद सुनाई देता था।अब मुझसे न रहा गया।मै भागता वहॉ पहुॅचा।जब मै घेरे को तोड़कर इनके पास पहुॅचा तो वहॉ का दृश्य देख कर मेरा कलेजा धक्क करके रह गया।वो औरत ऊॅकडू बैठी थी।उसके ब्लाउज की पिछली दो तीन बटने खूली थीं और वो आदमी उसकी पीठ पर अपना दोनो हॉथ जोड़े घूसे बरसाए जा रहा था।मै आनन फानन आगे बढा और उसे ठेलता एक ओर ले जा कर पटक दिया।जब मै वापस आया तो वो औरत खड़ी दर्द से कराह रही थी।उसे देख कर मेरी ऑखों के सामने अन्धेरा ही छा गया।वो हेमा थी।मेरे सामने तो उसके एक पसली के पति के आने की हिम्मत न हुई.पर वो भींड़ को संवोधित करके अपनी दर्द भरी कहानी सुनाये जा रहा था.जिसे याद करते ही मेरे रोंगटे आज तक खड़े हो जाते हैंःआप लोग जिस औरत को देख रहे हैं वो मेरी पत्नी है।उससे मैने रीत रिवाज के साथ ब्याह किया है।पहले ये बनारस की एक नामवर रंडी थी।मैने सोचा शायद घर गृहस्थी मे आने के बाद ये सुधर जाएगी.पर ये मेरी भूल थी।मै एक स्कूल मे अध्यापक हूॅ।मेरी गैरहाजरी मे मै ये पता नही किसका किसका मन खुश करती है और जब मेरे प्रति इसे अपना धर्म निबाहना होता है तो सैकड़ों बहाने बनाती है।

मै जाकर उसका गला पकड़ लियाःकमीने कुत्तेःये पढी लिखी लड़की एक इज्जतदार परिवार की लाड़ली है।तुम उसे भगा कर ले गए।इसकी याद मे इसका पूरा परिवार आज तक रोता है।इसे या तो तुम फगुईयॉ पहुॅचा आओ या फिर मै पहुॅचा आता हूॅ।अगर तुमने इसे एक बार भी अब हॉथ लगाया तो मै तुम्हारा गला दबा दूॅगा।

मेरी बदकिस्मती ये थी कि भींड़ का एक आदमी भी मेरी बातों पर कान न धरा।सारे लोग उस कमीने के पक्ष मे थे।दो चार तो मुझे मारने पीटने के लिए भी आगे बढे।एक दो मुक्के भी मुझे खाने पड़े।मैने हॉथ जोड़ जोड़ कर सबके सामने गुहार लगाईःइस औरत को उद्धार चाहिये।आप लोग मेरा साथ क्यो नही देते!इसका पूरा परिवार आप सबों का आजीवन उपकार मानेगा।

पर मेरी मदद को एक भी आगे न बढा।

हमारी ट्रेन आगे बढी।रास्ते मे आए हर छोटे बड़े स्टेशनो पर उतर कर मै रेलवे पुलिस स्टेशन की ओर भागा।ऐसी कोई चीज मुझे कहीं न दिखी।मुजफ्फरपुर से पहले दो बड़े जंक्शन भी आए.जहॉ हमारी ट्रेन आधे घन्टे के लिए रूकी।वहॉ भी मुझे एक भी खाकी वर्दी न दिखी।मै गार्ड साहब के पास भी गया और संक्षिप्त मे उन्हे सब कुछ बता कर मदद मॉगी।उस काईये का जवाब तो और भी निराला थाःक्या चाहते हैं आप!मै गाड़ी रूकवा कर मिलिट्री बुलवाऊॅ!अपनी पत्नी पर कौन नही हॉथ छोड़ता!कौन से डिब्बे मे बैठी हैं आप की सीता जी!

मुजफ्फरपुर जंक्शन पर हमारी ट्रेन बिल्कुल खाली हो गई।मै भागा टिकट चेकर के बगल मे खड़ा हो गया.जहॉ से कई मुझे घूरते हिकारत की नजर से देखते गुजर गए.पर मुझे हेमा कहीं न दिखी।मेरे जीवन में कई असहाय क्षण आए और गए.पर मुजफ्फरपुर की ये सुवह मुझसे भूलाए भी नही भूलती।इतना असहाय मैने अपने आप को कभीं भी जीवन मे न पाया।

हेमा से मिल कर भी मै उसे उसके जल्लाद से मुक्त न करवा सका।उसे उसके परिवार को न सौंप सका।

उसके नारकीय जीवन का दोष मै उस पर नही मढ सकता।दोष मै ईश्वर से ज्यादे जन को देता हूॅ।

मिथलेष को आज तक मै बस यही न लिख पाया।करीव करीव सूखते घाव को कुरेदने का फायदा भी क्या था!

प्रिय मिथलेष

मुझे माफ करना भई।विना तुमसे पूछे तुम्हारे परिवार के वारे मे मै कुछ ज्यादे ही लिख गया।क्षमा करना।

तुम्हारा कायर और अशक्त मित्र

प्रमोद कुमार सिंह